शाम सूंदर बाली जी द्वारा गायत्री मन्त्र पर चर्चा के अंश

१ गायत्री मंत्र क्या है ? और किस देव कि प्रार्थना के लिए है ?

ॐ भूर भुवः स्वः, तत सवित्तुर वरेण्यम, भर्गो देवस्य धीमहि, धियो योह नः प्रचोदयात । इस मन्त्र को ही गायत्री मन्त्र या सवित्तुर मन्त्र ॐ गणेशाये नमः

introduction

गायत्री महामंत्र वेदों का एक महत्त्वपूर्ण मंत्र है जिसका महत्व हिन्दू संस्कार में ॐ के लगभग बराबर माना जाता है। ऐसा माना जाता है कि इस मंत्र के उच्चारण और इसे समझने से ईश्वर की प्राप्ति होती है। इसे श्री गायत्री देवी रूप में भी पूजा जाता है। आइये गायत्री मन्त्र के महत्व के बारे में श्री शाम सुन्दर जी जो एक संस्कार विशेषज्ञ हैं उनसे जानते हैं ।

१ गायत्री मंत्र क्या है ? और किस देव कि प्रार्थना के लिए है ?

ॐ भूर भुवः स्वः, तत सवित्तुर वरेण्यम, भर्गो देवस्य धीमहि, धियो योह नः प्रचोदयात । इस मन्त्र को ही गायत्री मन्त्र या सवित्तुर मन्त्र कहते हैं । यह मन्त्र सवित्तुर देव yani सूर्यदेव की उपासना का मन्त्र है

२ यह मन्त्र किसने और कहाँ सिद्ध किया?

गायत्री मन्त्र जिसे हम जानते हैं वह वेदों से हम जान पाए हैं । वास्तव में गायत्री मन्त्र दो मन्त्रों से बना है जिसकी पहली पंक्ति (ॐ भूर भुवः स्वः) यजुर्वेद से और बाकि तीन पंक्तियाँ (तत सवित्तुर वरेण्यम, भर्गो देवस्य धीमहि, धियो योह नः प्रचोदयात) ऋग्वेद से आयी हैं । इस मंत्र को महर्षि विश्वामित्र ने सिद्ध किया है ।

३ इसे गायत्री मन्त्र क्यों कहते हैं?

गायत्री एक छंद का रूप है । जब भी कोई मन्त्र आठ आठ अक्षरों की तीन पंक्तियों में लिखा जाता है उसे गायत्री मन्त्र कहते हैं । हमारे वेदों में और पुराणों में बहुत से गायत्री मन्त्र हैं । लेकिन सवित्तुर गायत्री मन्त्र ही सबसे ज्यादा सटीक और प्रभाव शाली होने के कारण हमारे संस्कारों में सबसे ज्यादा प्रचलित है ।

४ गायत्री मन्त्र का अर्थ क्या है?

कोई भी मन्त्र ॐ से आरम्भ करने से ही फलीभूत होता है इस लिए यह मंत्र भी ॐ से ही आरम्भ होता है । सूर्योदय से पहले सूर्य को ही सवितुर देव कहा गया है और उदय होने के बाद उसी को सूर्यदेव कहा गया है । यह मंत्र उसी सवित्तुरदेव सूर्यदेव को समर्पित है । गायत्री मंत्र में ॐ भूर भुवः स्वः तीन व्याहृतियाँ का घोतक है । व्याहृतियाँ यानि पृथ्वीलोक, आकाशलोक और अंतरिक्ष या धूलोक के कण कण में समाये हुए ज्ञान रुपी प्रकाश को इंगित करता है । गायत्री मंत्र का पूर्ण अर्थ है , हे प्रकाश रूपी परमात्मा जो पृथ्वी पर अग्नि रूप में और आकाश में विधुत रूप में और अंतरिक्ष में सूर्य रूप में विद्यमान है , आपके इस तेज और विशुद्ध प्रकाश को मैँ नमन और वरण करता हूँ । जिस विशुद्ध प्रकाश और शुद्ध तेज को वरण करके बुद्धिमान देवता देवत्व को प्राप्त करते हैं , मुझे भी वही विशुद्ध ज्ञान , शुद्ध तेज, ज्ञान, और प्रगाढ़ सद्बुद्धि के सत्मार्ग के रास्ते पर चलने की प्रेरणा दो , हे परमात्मा मेरी यही आपसे विनम्र प्रार्थना है ।

५ गायत्री मन्त्र के उच्चारण से क्या लाभ मिलता है /

हजारों वर्षों से गायत्री मन्त्र उपनयन संस्कार में गुरु वरण के समय, विद्या आरम्भ करने पर तेज, बुद्धि और ज्ञान कि प्राप्ति के लिए उच्चारण किया जाता रहा है । गायत्री मंत्र का नियमित रुप से जप करने से व्यक्ति में नकारात्मक शक्तियाँ बिलकुल नहीं आती। जप से कई प्रकार के लाभ होते हैं, व्यक्ति का तेज बढ़ता है और मानसिक चिंताओं से मुक्ति मिलती है।बौद्धिक क्षमता और मेधाशक्ति यानी स्मरणशक्ति बढ़ती है। गायत्री मंत्र में चौबीस अक्षर होते हैं, यह 24 अक्षर चौबीस शक्तियों-सिद्धियों के प्रतीक हैं। यही कारण है कि हिन्दू संस्कारों में गायत्री मन्त्र अग्नि होत्र का सबसे आवशयक मन्त्र है । गायत्री मंत्र का दैनिक १०८ बार जप करने से हर मनोकामना पूर्ण होती है ।

इसी कारण ऋषियों ने गायत्री मंत्र को सभी प्रकार की मनोकामना को पूर्ण करने वाला बताया है।

६ धन्यवाद

धन्यवाद एवं नमस्कार

शाम सूंदर बाली जी

वर्चुअल पुरोहित

ॐ भूर भुवः स्वः, तत सवित्तुर वरेण्यम, भर्गो देवस्य धीमहि, धियो योह नः प्रचोदयात